देहली 8

मैं टिका रहा।

एक शब्द है जिसे हमारा समय कम पसंद करता है।

स्थायित्व।

यह एक पुराना शब्द लगता है।

पुराने ज़माने का।

लगभग संदिग्ध।

हम एक ऐसे युग में जीते हैं जो गति, तेज़ी, निरंतर परिवर्तन का उत्सव मनाता है। हर चीज़ को तेज़ी से बदलना चाहिए। हर चीज़ को बदल दिया जाना चाहिए। हर चीज़ को विकसित होना चाहिए।

फिर भी, अपने जीवन को देखते हुए, जिन लोगों ने सबसे गहरी छाप छोड़ी वे वे नहीं थे जो सबसे तेज़ दौड़े।

वे वे थे जो टिके रहे।

उसी जगह पर टिके नहीं।

उसी स्थिति में टिके नहीं।

उसी आदत में टिके नहीं।

किसी चीज़ के प्रति वफ़ादार टिके रहे।

किसी सिद्धांत के प्रति।

किसी ज़िम्मेदारी के प्रति।

किसी वादे के प्रति।

किसी व्यक्ति के प्रति।

अपने किसी प्रामाणिक हिस्से के प्रति।

लंबे समय तक मैंने सफलता को गति समझने की भूल की।

जितना मैं यात्रा करता, जितना काम करता, जितने अनुभव जमा करता, उतना ही मुझे आगे बढ़ने का आभास होता।

कुछ हद तक यह सच था।

पर यह सच्चाई का केवल एक हिस्सा था।

दूसरा हिस्सा मैंने बहुत बाद में खोजा।

आगे बढ़ने का ज़रूरी मतलब दूर जाना नहीं है।

कभी-कभी इसका मतलब टिके रहना है।

मुझे कई ऐसे क्षण याद हैं जिनमें सबसे आसान विकल्प छोड़ देना होता।

इसलिए नहीं कि विकल्पों की कमी थी।

इसके विपरीत।

विकल्प अनेक थे।

नए अवसर।

नई दिशाएँ।

नई शुरुआतें।

दुनिया हमेशा नए प्रस्थान देती है।

निरंतरता वह बहुत कम देती है।

निरंतरता को बनाना पड़ता है।

दिन-ब-दिन।

बिना तालियों के।

बिना उपाधियों के।

बिना दर्शकों के।

जीवन के अदृश्य हिस्से में।

वह जिसे लगभग कोई नहीं देखता।

समय के साथ मैंने महसूस किया कि हर व्यक्ति अलग-अलग मौसमों से गुज़रता है।

विजय के मौसम होते हैं।

खोज के मौसम।

विकास के मौसम।

और फिर सहनशीलता के मौसम आते हैं।

वे जिनमें सवाल यह नहीं होता:

"तुम कितनी दूर पहुँच सकते हो?"

बल्कि:

"तुम कितना उपस्थित रह सकते हो?"

ये कठिन मौसम होते हैं।

क्योंकि ये तुरंत दिखने वाले परिणाम नहीं देते।

ये वीरोचित तस्वीरें नहीं देते।

ये शानदार कहानियाँ नहीं रचते।

पर ये चरित्र गढ़ते हैं।

जीतों से कहीं अधिक।

मैंने ऐसे लोगों को जाना है जिन्होंने असाधारण करियर बनाए पर एक रिश्ता नहीं बना सके।

ऐसे लोग जो विशाल संगठनों का नेतृत्व करने में सक्षम थे पर एक मुश्किल बातचीत का सामना करने में असमर्थ।

ऐसे लोग जिन्होंने दुनिया जीत ली और खुद को खो दिया।

उन्हें देखकर मैंने कुछ सीखा।

टिके रहना कोई भौगोलिक मामला नहीं है।

यह एक नैतिक मामला है।

तुम दस बार देश बदल सकते हो और जो मायने रखता है उसके प्रति वफ़ादार रह सकते हो।

तुम पूरा जीवन उसी सड़क पर बिता सकते हो और अपने हर सिद्धांत से विश्वासघात कर सकते हो।

फ़र्क तय की गई दूरी में नहीं है।

वह वफ़ादारी में है।

वफ़ादारी एक ऐसा शब्द है जिसे अक्सर गलत समझा जाता है।

बहुत से लोग इसे निश्चलता से जोड़ते हैं।

मैं इसे संगति से जोड़ता हूँ।

वफ़ादारी बदलने से नहीं रोकती।

वह तुम्हें खुद को खोने से रोकती है।

और यह भेद बुनियादी है।

सालों के दौरान मैं कई रूपांतरणों से गुज़रा।

पेशेवर।

व्यक्तिगत।

भीतरी।

कुछ चुनाव स्वेच्छा से किए गए।

कुछ जीवन ने मुझ पर थोप दिए।

सब सुखद नहीं थे।

सब सही नहीं थे।

पर मैंने एक चीज़ बनाए रखने की कोशिश की।

जो मैं कहता था और जो मैं करता था उसके बीच की निरंतरता।

मैं हमेशा सफल नहीं हुआ।

कोई भी हमेशा सफल नहीं होता।

पर मैंने कोशिश की।

और अक्सर जीवन ठीक इसी को नापता है।

कोशिश को।

पूर्णता को नहीं।

सबसे व्यापक भ्रमों में से एक यह है कि ताकत असाधारण क्षणों में प्रकट होती है।

मैंने इसके विपरीत पाया।

ताकत दोहराव में प्रकट होती है।

हर सुबह उठने में।

जो करना है उसे करने में।

जब कोई ध्यान न दे तब भी उपस्थित बने रहने में।

जो सँभालने योग्य है उसे न छोड़ने में।

यह एक मौन वीरता है।

लगभग अदृश्य।

और शायद ठीक इसीलिए यह प्रामाणिक है।

मैं अक्सर उन बंधनों के बारे में सोचता हूँ जो मेरे अस्तित्व से गुज़रे।

परिवार।

दोस्त।

सहयोगी।

प्रिय लोग।

उनमें से कई बंधन इसलिए बचे रहे क्योंकि कोई टिका रहा।

पूर्ण नहीं।

अजेय नहीं।

बस उपस्थित।

जब मुश्किलें आती हैं, तो तुम जल्दी ही जान जाते हो कि कौन टिके रहने को तैयार है।

जब सब ठीक चलता है, तो हम लोगों से घिरे रहते हैं।

जब सब मुश्किल हो जाता है, तो भीड़ छँट जाती है।

और उसी क्षण प्रामाणिक उपस्थितियाँ उभरती हैं।

वे कम होती हैं।

पर काफ़ी होती हैं।

जीवन की गुणवत्ता शायद ही उन लोगों की संख्या पर निर्भर करती है जिनसे तुम मिलते हो।

यह उन लोगों की संख्या पर निर्भर करती है जो तब टिके रहते हैं जब रास्ता उलझ जाता है।

सालों के बीतने के साथ मैंने स्थायित्व को साहस के एक रूप के रूप में देखना शुरू किया।

पलायन से कहीं अधिक कठिन।

शुरुआती उत्साह से कहीं अधिक कठिन।

वादों से कहीं अधिक कठिन।

क्योंकि वादे एक पल में कहे जाते हैं।

स्थायित्व सालों की माँग करता है।

यह त्याग की माँग करता है।

यह धैर्य की माँग करता है।

यह चरित्र की माँग करता है।

बहुत से लोग शुरू करते हैं।

कुछ ही जारी रखते हैं।

उससे भी कम टिके रहते हैं।

पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे अपने सभी फ़ैसलों पर गर्व नहीं है।

किसी को भी नहीं होना चाहिए।

पर एक चीज़ है जिसे मैं स्वीकार करता हूँ।

जो हालात सचमुच मायने रखते थे, उनमें मैंने वहाँ होने की कोशिश की।

अपने परिवार के लिए।

उन लोगों के लिए जिनसे मैं प्रेम करता था।

उन ज़िम्मेदारियों के लिए जिन्हें मैंने स्वीकार किया था।

अपने दिए हुए वचन के लिए।

हमेशा पूर्ण तरीके से नहीं।

पर जितना संभव हो उतने ईमानदार तरीके से।

आख़िर में, शायद जीवन हमसे यह नहीं पूछेगा कि हम कितनी जगहों से गुज़रे।

हमने कितनी उपाधियाँ जमा कीं।

हमने कितनी सफलताएँ बटोरीं।

शायद वह हमसे एक बहुत सरल सवाल करेगा।

"जब टिके रहने का समय था, तुम कहाँ थे?"

मेरा जवाब पूर्ण नहीं है।

पर वह ईमानदार है।

मैं टिका रहा।